

बाल विकास —

- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति — सन् 1900 ई.
- शिक्षा मनोविज्ञान एक विज्ञान है — मानव व्यवहार का
- 'मनोविज्ञान' शब्द के समानान्तर अंग्रेजी भाषा के शब्द 'साइकोलॉजी' की व्युत्पत्ति किस भाषा से हुई है — ग्रीक भाषा से
- शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध — सभी विषयों से
- "मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है" यह कथन है — स्किनर का
- "शिक्षा मनोविज्ञान, अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है।" यह कथन है — स्किनर
- स्किनर के शब्दों में — "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसका सम्बन्ध पढ़ाने व सीखने से है।"
- "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के क्रियाकलापों का विज्ञान है।" यह कथन है — बुडवर्थ का
- "मनोविज्ञान मन का विज्ञान है।" यह कथन है — अरस्तु का
- बुडवर्थ ने सबसे पहले निर्माण किया — प्रश्नावली का
- "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।" इस परिभाषा के प्रतिपादक हैं — ई.वाटसन
- स्किनर के अनुसार, शिक्षा मनोविज्ञान, के अन्तर्गत शिक्षा से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का सम्बन्ध है — सीखना
- किस मनोवैज्ञानिक अध्ययन विधि में उत्तरदाता प्रश्नकर्ता के सम्मुख नहीं बैठता — प्रश्नावली विधि
- मनोविज्ञान की अध्ययन विधियों में से प्राचीनतम विधि है — अन्तर्दर्शन विधि
- बालक के व्यक्तिगत अध्ययन की मनोवैज्ञानिक विधि है — केस स्टेडी
- शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए, ताकि — इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके
- अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है — मनोविश्लेषण विधियों द्वारा
- मनोविज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में सहायता देता है तथा बताता है — शिक्षा के उद्देश्य सम्भावित हैं अथवा नहीं
- मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली के जन्मदाता हैं — सिगमंड फ्राइड
- वर्तमान समय में मनोविज्ञान है — व्यवहार का विज्ञान
- 'साइकी' का अर्थ है — मानवीय आत्मा या मन
- शैशवावस्था में बालक में पाया जाता है — अनुकरण करना, सहयोग लेना, आश्रितता
- मानव मन को प्रभावित करने वाला कारक है — व्यक्ति की रुचियां, अभिमतताएं, अभियोग्ताएं व वातावरण
- मनोविज्ञान को शुद्ध विज्ञान माना है — जेम्स ड्रैवर ने
- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति के सम्बन्ध में कहा जा सकता है — यह सर्वव्यापी है तो सार्वभौमिक
- मनोविज्ञान के अन्तर्गत — मानव का अध्ययन किया जाता है, जीव जन्तुओं का अध्ययन किया जाता है, संसार के अन्य सभी प्राणियों का अध्ययन किया जाता है

- शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन का उद्देश्य है – विद्यार्थियों द्वारा किसी बात के सीखे जाने को प्रभावित करना
- शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र है – व्यापक
- सांख्यिकी है – कला व विज्ञान दोनों
- मूल्यांकन का क्षेत्र है – सीमित
- मूल्यांकन को मापने की विधि है – परिमाणात्मक विधि, गुणात्मक विधि
- शिक्षा मनोविज्ञान का मूल उद्देश्य है – विद्यार्थियों की योग्यताओं एवं क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा किसी बात को सीखे जाने से सम्बन्धित बात को प्रभावित करता है।
- मनोविज्ञान के उपयोग की कठिनाई है – मनोवैज्ञानिक परीक्षण मूल्य की दृष्टि से इतने महंगे होते हैं कि सभी पाठशालाओं में उन्हें उपलब्ध नहीं कराया जा सकता।
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण को निर्माण में समय लगता है – अधिक
- किस विधि में उद्दीपन, अनुक्रिया के मध्य होने वाले सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है – मनोभौतिकी विधि
- बालक के निजी व्यवहार का अंकन करने में कौन सी विधि सहायक होती है – नियन्त्रण निरीक्षण विधि
- किस विधि में एक ही बालक का अध्ययन किया जाता है – लम्बात्मक विधि
- विकास एक प्रक्रिया है – निरन्तर
- बाल्यावस्था में मस्तिष्क का विकास हो जाता है – 90 प्रतिशत
- अन्तर्दर्शन विधि में बल दिया जाता है – स्वयं के अध्ययन पर
- बालक को आनन्ददायक सरल कहानियों द्वारा नैतिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए यह कथन है – कोलेसेनिक का
- छात्रों के व्यक्तित्व को मापने और परामर्श देने के लिए जिस पद्धति का प्रयोग किया जाता है – साक्षात्कार विधि
- किस मनोवैज्ञानिक का कहना है कि सभी बालक जन्म के समय समान होते हैं – वाटसन
- वृद्धि और विकास है – एक दूसरे के पूरक
- सृजनशील बालकों का लेक्षण है – जिज्ञासा
- मानव विकास जिन दो कारकों पर निर्भर करता है, वह है – जैविक और सामाजिक
- संवेगात्मक विकास में किस अवस्था में तीव्र परिवर्तन होता है – किशोरावस्था में
- शिक्षक बालकों की पाठ में रुचि उत्पन्न कर सकता है – संवेगों से
- जिस आयु में बालक की मानसिक योग्यता का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है, वह है – 14 वर्ष
- “मस्तिष्क द्वारा अपनी स्वयं की क्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है।” – आत्म निरीक्षण विधि
- यह परिभाषा किसकी है ? “मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है” – स्किनर
- एक माता पिता के अलग – अलग रंग की सन्तान होती हैं, क्योंकि – जीव कोष के कारण
- मूल्यांकन प्रत्यय है – विस्तृत
- मापन का क्षेत्र होता है – विस्तृत

- कितने माह का शिशु प्रौढ़ व्यक्ति की मुख मुद्रा को पहचानने लगता है
— 4 से 5 मास का शिशु
- वाटसन ने नवजात शिशु में मुख्य रूप से किन संवेगों की बात कही है — भय, क्रोध व स्नेह
- समानता के नियम के अनुसार माता पिता जैसे होते हैं, उनकी सन्तान भी होती है
— माता पिता जैसी
- शिशु का विकास प्रारम्भ होता है — गर्भकाल में
- बालक की मूल शक्तियों का प्रधान कारक है — वंशानुक्रम
- वंश का बुद्धि पर प्रभाव देखने के लिए सैनिकों के वंशज का अध्ययन किया — गोडार्ड
- चिन्तन शक्ति का प्रयोग करने का अवसर देते हैं — तर्क, वाद विवाद, समस्यासमाधान
- बच्चों का स्वभाव होता है — माता के अनुकूल, पिता के अनुकूल
- बाल विकास की दृष्टि से सर्वाधिक समस्या का काल होता है — शैशवावस्था
- "बालक की अभिवृद्धि जैवकीय नियमों के अनुसार होती है।" यह कथन है — क्रोग मैन
- पैतृक गुणों के हस्तान्तरण के सिद्धान्तों को स्पष्ट किया था — मैण्डल ने
- बालक को दाएं-बाएं का ज्ञान हो जाता है — 6 वर्ष की आयु में
- बुद्धिलब्धि का संबंध है — बुद्धि से
- बाल्यावस्था के लिए पर्याप्त नींद होती है — 8 घंटे
- बालिकाओं की लम्बाई की दृष्टि से अधिकतम आयु है — 16 वर्ष
- बुद्धिलब्धि को ज्ञात करने का सूत्र किस मनोवैज्ञानिक ने दिया है — स्टर्न
- रॉस ने विकास क्रम के अन्तर्गत किशोरावस्था का काल निर्धारित किया है — 12 से 18 वर्ष तक
- संकल्प शक्ति के कितने अंग हैं — तीन
- सात वर्ष की आयु तक पहुंचते — पहुंचते एक सामान्य बालक का शब्द भण्डार हो जाता है
— 6000 शब्द
- बालक के सामाजीकरण का प्राथमिक घटक है — क्रीड़ा स्थल
- बालकों के विकास की किस अवस्था को सबसे कठिन काल के रूप में माना जाता है
— किशोरावस्था
- स्टर्न के अनुसार खेल क्या है — खेल एक ऐच्छिक, आत्म नियंत्रित क्रिया है
- लड़कियों में बाह्य परिवर्तन किस अवस्था में होने लगते हैं — किशोरावस्था
- वह खेल जिसमें बालक स्वयं कुछ बनाता है — रचनात्मक
- जिस बुद्धि का कार्य सूक्ष्म तथा अमूर्त प्रश्नों का चिन्तन तथा मनन द्वारा हल करना है, वह है
— अमूर्त बुद्धि
- आदतों का निर्माण किया जा सकता है — अभ्यास द्वारा, संकल्प की दृढ़ता, उद्देश्यों को स्पष्ट करके
- कोई व्यक्ति डॉक्टर बनने की योग्यता रखता है तो कोई व्यक्ति शिक्षक बनने की योग्यता। यह किस कारण से होती है — अभिरुचि के कारण
- जिस विधि के द्वारा बालक को आत्म निर्देशन के माध्यम से बुरी आदतों को छुड़वाने का प्रयास किया जाता है, वह विधि है — आत्मनिर्देश विधि
- शिक्षा का कार्य है — अर्जित रुचियों को स्वाभाविक बनाना
- व्यक्ति की मूल प्रवृत्ति से सम्बन्धित रुचि कहलाती है — जन्मजात रुचि

- बालक के सामाजिक विकास में सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन सा है — वातावरण
- व्यक्ति को प्रभावित करने वाले तत्व हैं — वंशानुक्रम तथा वातावरण
- एक बालक की बुद्धि लब्धि 150 है, तो वह बालक है — प्रतिभाशाली बालक
- बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषता नहीं है — अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
- संवेगात्मक विकास में किस अवस्था में तीव्र परिवर्तन होता है — किशोरावस्था
- बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास किस अवस्था में पूर्णता को प्राप्त होता है — किशोरावस्था
- सामान्य बुद्धि बालक प्रायः किस अवस्था में बोलना सीख जाते हैं — 11 माह
- शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र है — बालक
- बहिर्मुखी व्यक्ति होता है — उसकी सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि होती है
- रक्त प्रधान व्यक्ति — प्रसन्नचित्त होते हैं, चंचल होते हैं, क्रियाशील होते हैं
- अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति रुचि रखते हैं — स्वयं अपने में
- सुविधा की दृष्टि से आगे चलकर मनोवैज्ञानिक ने शील गुणों को कितने भागों में विभाजित किया — चार
- व्यक्तित्व मापन की पुरानी विधि है — ज्योतिष द्वारा
- 'परसोना' शब्द का लैटिन भाषा में अर्थ होता है — बाहरी रूप रंग या नकली चेहरा
- व्यक्तित्व मापन के लिए व्यक्ति की सम्पूर्ण सूचनाएं प्राप्त करने की विधि है — व्यक्ति इतिहास विधि
- बहिर्मुखी बालक की विशेषताएँ — चिन्ता ग्रस्त, कार्य करने की दृढ़ इच्छा, शान्त एवं आशावादी
- यह वह शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सम्बन्ध जानता है कि वह क्या है तथा दूसरे व्यक्ति उसके बारे में क्या सोचते हैं इस शक्ति का नाम क्या है — आत्म चेतना
- "जिस वस्तु के आधार पर एक व्यक्ति की दूसरे से भिन्नता की जा सके, उसे लक्षण कहते हैं। यह कथन है — मर्फी का
- आकर्षक व्यक्तित्व हमें सतत अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहता है। यह है — ध्येय की ओर अग्रसर होना
- जिन तथ्यों का निर्धारण किया जाता है और उनका सार निकालकर संख्यात्मक रूप में व्यक्त करना कहलाता है — निर्धारण मान
- जब किसी व्यक्ति को अवलोकन निश्चित परिस्थितियों में ही किया जाता है, तो वह कहलाता है — नियन्त्रित अवलोकन
- अन्तर्मुखी बालक होता है — एकान्त में विश्वास करने वाला
- जिस साक्षात्कार के माध्यम से छात्र के घर तथा वातावरण के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त की जाती हैं, वह है — निदानात्मक साक्षात्कार
- बाह्य रूप से दो व्यक्ति एकसमान हैं, लेकिन वे अन्य आन्तरिक योग्यताओं की दृष्टि से समरूप नहीं हैं, ऐसी व्यक्तिगत विभिन्नता कहलाती है — आन्तरिक विभिन्नता
- व्यक्तिगत विभिन्नता को प्रभावित करने वाले तत्व हैं — वंशानुक्रम तथा वातावरण
- मनोशारीरिक असमानताओं को कहा जाता है — व्यक्तिगत विभिन्नता
- मानसिक विभेद के अन्तर्गत आता है — रुचि सम्बन्धी भेद, योग्यता सम्बन्धी भेद, स्वभावगत भेद
- व्यक्तिगत भिन्नता होती है — बौद्धिक, शारीरिक, व्यक्तित्व सम्बन्धी

- मूल प्रवृत्तियाँ एक जाति के प्राणियों में एक सी होती हैं, यह कथन है – **भाटिया का**
- व्यक्तिगत विभेद को ज्ञात करने की विधियाँ हैं – **बुद्धि परीक्षण, व्यक्ति इतिहास विधि, रुचि परीक्षण**
- शारीरिक रूप से व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य जो भिन्नता दिखाई देती है, वह कहलाती है – **बाहरी विभिन्नता**
- मोटे रूप में व्यक्तिगत विभेद को कितने भागों में विभाजित किया गया है – **दो**
- व्यक्तिगत भेद को ध्यान में नहीं रखकर शिक्षण में प्रयुक्त की जाती है – **व्याख्यान पद्धति**
- पावलोव ने अधिगम का जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया था, वह है – **अनुकूलित अनुक्रिया**
- अन्तर्दृष्टि पर प्रभाव डालने वाले तत्व हैं – **बुद्धि, अनुभव, प्रयत्न एवं त्रुटि**
- “मापन किया जाने वाला व्यक्तित्व का प्रत्येक पहलू वैयक्तिक भिन्नता का अंश है।” उपर्युक्त परिभाषा दी है – **स्किनर ने**
- क्रियात्मक अनुबन्धन का सिद्धान्त किसकी देन माना जाता है – **स्किनर की**
- जिन आदतों का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है, वह है – **नाड़ीमण्डल सम्बन्धी आदतें**
- सीखने का मुख्य नियम है – **अभ्यास का नियम**
- थार्नडाइक का अधिगम सिद्धान्त किस नाम से जाना जाता है – **प्रयास व त्रुटि का सिद्धान्त**
- कक्षा वातावरण में सीखने का महत्वपूर्ण नियम है – **हस्तलेखन**
- शिक्षा मनोविज्ञान जरूरी है – **शिक्षक, छात्र, अभिभावक के लिए**
- “सीखना विकास की प्रक्रिया है।” अधिगम की यह परिभाषा किसने दी है – **वुडवर्थ**
- सीखना प्रभावित होता है – **प्रेरणा से**
- सीखने के बिना सम्भव नहीं है – **वृद्धि और अभिवृद्धि**
- सीखने के लिए विषय सामग्री का स्वरूप होना चाहिए – **सरल से कठिन**
- छात्रों द्वारा विचार-विनिमय किया जाता है – **सम्मेलन व विचार गोष्ठी से**
- प्रारम्भिक कक्षाओं में सीखने की जिन विधियों को महत्व दिया है, वह है – **करके सीखना**
- सीखने के प्रकार हैं – **ज्ञानात्मक अधिगम, गामक अधिगम, संवेदनात्मक अधिगम**
- हम जो भी नया काम करते हैं उसे आत्मसात कर लेते हैं। यह सम्बन्धित है – **आत्मीकरण के नियम से**
- जब किसी वस्तु को देखकर या स्पर्श कर ज्ञान प्राप्त किया जात है तो वह सीखना कहलाता है – **प्रत्यक्षात्मक सीखना**
- तत्परता के द्वारा हम कार्य सीख लेते हैं – **शीघ्र**
- थार्नडाइक मनोवैज्ञानिक थे – **अमेरिका के**
- वंचित वर्ग में शामिल होते हैं – **अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, विकलांग बालक**
- स्किनर ने कितने प्रकार के उपपुनर्बलन का प्रयोग किया है – **चार प्रकार के**
- ‘कोहलर’ का अधिगम-सिद्धान्त किस नाम से जाना जाता है – **उद्दीपन-अनुक्रिया का सिद्धान्त**
- अधिगम को प्रभावित करने वाले घटक हैं – **उचित वातावरण, प्रेरणा, परिपक्वता**
- अधिगम तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से परिपक्व नहीं हो।
- व्यक्तित्व के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन है – **अनुकरण**
- हम दुःखी मनुष्य को देखकर भी उसकी सहायता नहीं करते यह है – **निष्क्रिय सहानुभूति**

- निष्क्रिय सहानुभूति होती है – **मौखिक व कृत्रिम**
- जिस सहानुभूति में क्रियाशीलता होती है वह है – **सक्रिय**
- सहानुभूति में निहित है – **क्रिया व अभिक्रिया**
- सहानुभूति का मुख्य अर्थ है – **संवेग की उत्पत्ति**
- बालक को सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जा सकती है – **विभिन्न सामाजिक क्रियाओं**
- बालक में स्पर्द्धा को प्रोत्साहन देना है – **क्रोध को बढ़ावा**
- सहानुभूति का महत्व है – **शिक्षक के लिए, बालक के लिए**
- मोटीवेशन शब्द की उत्पत्ति हुई है – **लेटिन भाषा के मोटम धातु से**
- प्रेरणा के स्रोत हैं – **चालक, प्रेरक, उद्दीपन**
- प्रेरणा का प्रमुख स्थान है – **सीखने में, लक्ष्य की प्राप्ति में, चरित्र निर्माण में**
- प्रेरणा होती है – **सकारात्मक, नकारात्मक**
- जो प्रेरक सीखे जाते हैं, उसे कहते हैं – **अर्जित प्रेरक**
- जो प्रेरक वातावरण के सम्पर्क में आने से विकसित होता है, वह है – **अर्जित प्रेरक**
- वह कारक जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए उत्साह बढ़ाता या घटाता है, उसे कहते हैं – **अभिप्रेरण**
- जन्मजात प्रेरक है – **भूख, प्यास, नींद**
- फ्रॉयड ने सबसे अधिक बल किस मूल प्रवृत्ति पर दिया है – **काम प्रवृत्ति**
- बालक किसी कार्य को अपनी इच्छा से करता है, वह है – **सकारात्मक प्रेरणा**
- स्वाभाविक प्रेरक है – **अनुकरण**
- विद्यालय में पुरस्कारों से हानि होती है – **केवल पुरस्कार के लिए कार्य करना**
- प्राथमिक आवश्यकताओं से उदय होती है – **द्वितीयक आवश्यकताएं**
- अधिगम की सफलता का मुख्य आधार माना जाता है – **लक्ष्य प्राप्ति की उत्कृष्ट इच्छा**
- ऐसे प्रेरक जो विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न परिस्थितियों में पलने के कारण विकसित होते हैं, वे कहलाते हैं – **व्यक्तिगत प्रेरक**
- अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक हैं – **आवश्यकताएं, आकांक्षा स्तर एवं रुचि, संवेगात्मक स्थिति**
- शिक्षा का कार्य है – **अर्जित रुचियों को स्वाभाविक बनाना**
- अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है – **मनोविश्लेषण विधियों द्वारा**
- व्यक्तित्व मापन के लिए व्यक्ति की सम्पूर्ण सूचनाएं प्राप्त करने की विधि है – **व्यक्ति इतिहास विधि**
- जिस साक्षात्कार के माध्यम से छात्र के घर तथा वातावरण के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त की जाती हैं, वह है – **निदानात्मक साक्षात्कार**
- वर्तमान में सर्वोत्तम माने जाने वाला व्यक्तित्व के प्रकारों का वर्गीकरण किसकी देन है – **जुंग**
- अधिगम का मुख्य चालक कहलाता है – **अभिप्रेरणा**
- व्यक्ति की वह दशा है जो किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए निश्चित व्यवहार स्पष्ट करती है – **अभिप्रेरक**
- अभिप्रेरणा से सम्बन्धित व्यवहार का लक्षण है – **उत्सुकता**
- ऐसा कौन सा अभिप्रेरणा का सिद्धान्त है जो संकल्प शक्ति पर बल देता है – **ऐच्छिक सिद्धान्त**

- अन्तर्मुखी बालक होता है — एकान्त में विश्वास रखने वाला
- ऐसे प्रेरक जो व्यक्ति जन्म के साथ ही लेकर आता है, वह हैं — जन्मजात प्रेरक
- अत्यधिक वाचल, प्रसन्नचित करने वाले तथा सामाजिक प्रवृत्ति के धनी वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व होता है — बहिर्मुखी
- सामायोजन नहीं कर पाने का कारण है — द्वंद, तनाव, कुण्ठा
- व्यक्ति की मूल प्रवृत्ति से सम्बन्धित रुचि कहलाती है — जन्मजात रुचि
- व्यक्तित्व का कुसमायोजन प्रकट करता है — झगड़ालू प्रवृत्तियों में, पलायनवादी प्रवृत्तियों में, आक्रमणकारी के रूप में
- सुधारात्मक शिक्षण उपयोगी है — असामान्य बालकों के लिए
- छात्रों को अपना अधिकतम विकास करने में सहायता देने के लिए — परामर्श की आवश्यकता पड़ती है
- व्यक्ति अपना सन्तुलन स्थापित करने में समर्थ होता है — विश्लेषण व निर्णय द्वारा
- सृजनात्मक योग्यता वाले बालकों की बुद्धि — प्रखर होती है
- अधिगम का मुख्य नियम है — तत्परता
- बाह्य विषय के गुणों को अपना लेने या दूसरे व्यक्ति के गुणों को अपने व्यक्तित्व में ग्रहण कर लेना — तादात्म्य कहलाता है
- निर्देशन की आवश्यकता होती है — अपनी रुचियों/योग्यताओं एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार भावी जीवन की योजना के लिए
- समायोजन मुख्य रूप से — व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों पर निर्भर होती है, पर्यावरण की अनुकूलता पर निर्भर होती है
- जटिल (समस्यात्मक) बालक के लक्षण हैं — विशेष प्रकार की शारीरिक रचना
- विकास के स्वरूप माने गए हैं — 6
- व्यक्ति के मानसिक तनाव को कम करने की प्रत्यक्ष विधि है — बाधा दूर करना
- बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने के कारण हैं — विद्यालय का वातावरण, सामाजिक वातावरण, पारिवारिक वातावरण
- सीखने में जब हमारी उन्नति पूर्ण रुक जाती है, तब उसे कहते हैं — सीखने का वक्र
- 'संवेग' शब्द का शाब्दिक अर्थ है — उत्तेजना या भावों में उथल पुथल
- सीखने की विशेषताएं हैं — सार्वभौमिकता, निरन्तरता
- मूल्यांकन होता है — प्राप्य उद्देश्यों की प्राप्ति का
- मूल्यांकन का अर्थ है — छात्र के शैक्षिक लक्ष्यों की प्रगति की जांच करना
- खांख्यिकी है — कला व विज्ञान दोनों
- सीखना प्रारम्भ होता है — जिज्ञासा से
- बुद्धि लब्धि के अनुसार बालक होते हैं — औसत, मन्द बुद्धि, प्रखर बुद्धि
- मूल प्रवृत्तियों को कहा जाता है — जन्मजात प्रवृत्ति
- आदतों की विशेषताएं होती हैं — अर्जित विशेषताएं, सरलता एवं सुविधा, तत्परता
- अभिप्रेरणा से सम्बन्धित व्यवहार का लक्षण है — उत्सुकता
- खेल सबसे अधिक महत्वपूर्ण साधन है — नैतिक प्रशिक्षण का
- समायोजन के प्रकार हैं — रचनात्मक, मानसिक, स्थानापन्न

- प्रतिभावान बालकों की पहचान किस प्रकार की जा सकती है – **बुद्धि परीक्षा द्वारा, अभिरुचि परीक्षण द्वारा, उपलब्धि परीक्षण द्वारा**
- वंचित वर्ग के बालकों के अन्तर्गत बालक आते हैं – **अन्ध व अपंग बालक, मन्द-बुद्धि व हकलाने वाले बालक, पूर्ण अधिक या आंशिक बधिर**
- पिछड़ा बालक वह है जो “अपने अध्ययन के मध्यकाल में अपनी कक्षा कार्य जो अपनी आयु के अनुसार एक कक्षा नीचे का है करने में असमर्थ रहता है।” उक्त कथन है – **बर्ट का**
- “कुशाग्र अथवा प्रतिभावान बालक वे हैं जो लगातार किसी भी कार्यक्षेत्र में अपनी कार्यकुशलता का परिचय देता है।” उक्त कथन है – **टरमन का**
- प्रतिभावान बालकों में किस अवस्था के लक्षण शीघ्र दिखाई देते हैं – **बाल्यावस्था के**
- बालक के लिए मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए पाठ्यक्रम होना चाहिए – **रुचियों के अनुकूल**
- मौलिकता का गुण पाया जाता है – **सृजनशील बालकों में**
- असामान्ता के जैविक कारणों के अन्तर्गत शामिल होते हैं – **वंशानुक्रम व शरीर संरचना, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का प्रभाव, जन्मजात व अर्जित दोष**
- विद्यालय में बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को कौन सा कारक प्रभावित करता है – **मित्रता**
- ‘एक बालक प्रतिदिन कक्षा से भाग जाता है।’ वह बालक है – **पिछड़ा बालक**
- सीखने का सूझ के सिद्धान्त में किस जानवर पर प्रयोग किया गया – **चिम्पैंजी पर**
- शिक्षण और अधिगम है – **एक सिक्के के दो पहलू हैं, शिक्षण से अधिगम तथा अधिगम से शिक्षण की प्राप्ति होती है, दोनों गत्यात्मक प्रक्रियाएं हैं**
- जटिल बालकों के दो प्रकार किस विद्वान द्वारा बताए गए हैं – **बर्ट द्वारा**
- प्रतिभावान बालकों की पहचान करने के लिए हमें सबसे अधिक महत्व – **वस्तुनिष्ठ परीक्षणों को देना चाहिए**
- मनोविश्लेषण पद्धति के प्रवर्तक हैं – **फ्राइडयुंग व एडलर**
- मनोवैज्ञानिक विधि के अन्तर्गत कौन सी विधि काम में ली जाती है – **मनोनाटकीय, समाज नाटकीय, अनैदेशिक**
- सृजनात्मक बालक की प्रकृति होती है – **सृजनात्मक बालक सदैव सफलता की ओर उन्मुख रहते हैं**
- मन्दगति से सीखने वाले बालकों की शिक्षा के लिए क्या कदम उठाना चाहिए – **आवासीय विद्यालय, विशेष विद्यालय, विशेष कक्षा**
- बालापराध का कारण दूषित वातावरण भी होता है। दूषित वातावरण से आशय है – **वैश्यालय, शराबखाना, जुआघर**
- बर्ट के अनुसार पिछड़ा बालक वह है जिसकी शैक्षणिक लब्धि होती है – **85 से कम**
- यदि बालक ने यौन प्रवृत्ति से सम्बन्धित कोई अपराध किया है तो आप क्या करेंगे – **उसे नाटक, साहित्य, नृत्य व काव्य की तरफ मोड़ा जा सकता है**
- गम्भीर मन्दितमना वाले बालकों की शिक्षा लब्धि होती है – **19 से कम**
- पिछड़े बालक की समस्या है – **स्कूल सम्बन्धी समस्याएं, संवेगात्मक समस्याएं, सामाजिक समस्याएं**
- साधारण मन्दितमना वाले बालकों की शिक्षा लब्धि होती है – **51 से 36**

- पिछड़े बालकों की शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी करने के लिए क्या करना चाहिए – पिछड़ेपन के कारणों की खोज करना, व्यक्तिगत ध्यान, पाठान्तर क्रियाओं की व्यवस्था
- शिक्षा मनोविज्ञान सहायक है – सर्वांगीण विकास में
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक हैं – भूख एवं परिपक्वता, प्रशंसा एवं निन्दा, शिक्षण-पद्धति एवं अभ्यास
- सीखने में रुकावट आने का कारण है – पुरानी आदतों का नई आदतों से संघर्ष, कार्य की जटिलता, शारीरिक सीमा
- “सीखने की प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता पठार है।” यह कथन है – रौस का
- सीखने की आवश्यकता है – बालक का पूर्ण व्यक्तित्व
- सीखने की अन्तिम अवस्था में सीखने की गति होती है – धीमी
- सीखने की गति निर्भर करती है – सीखने वाले की रुचि, जिज्ञासा, सीखने वाले की प्रेरणा पर
- “शिक्षक सहानुभूति के द्वारा बालकों का संवेगात्मक विकास कर सकता है।” यह कथन है – झा का
- संवेग हमारे कार्यों को प्रदान करते हैं – गति
- शिक्षक अनुशासन की समस्या का समाधान कर सकता है – सहानुभूति से
- वह परीक्षण जिसमें बालक के सामने कुछ ऐसी कृत्रिम परिस्थितियाँ निर्मित की जाती हैं, जिनमें वह कुछ न कुछ व्यवहार करे, ताकि उसके उस व्यवहार को देखा जा सके – परिस्थिति परीक्षण
- किशोरों के शारीरिक विकास के लिए आयोजन करना चाहिए – विभिन्न प्रकार के शारीरिक व्यायाम
- “घनिष्ठ और व्यक्तिगत मित्रता उत्तम किशोरावस्था की विशेषता है।” यह कथन है – वैंलेन्टीन
- बुद्धि के सिद्धान्त हैं – द्वि-तत्त्व सिद्धान्त, असत्तात्मक सिद्धान्त, क्रमिक महत्व का सिद्धान्त
- विकास से अभिप्राय है – शारीरिक, मानसिक तथा व्यावहारिक संगठन, वातावरण से सम्बन्धित, जीवन-पर्यन्त सम्भव
- वृद्धि से अभिप्राय है – शारीरिक एवं व्यावहारिक परिवर्तन, शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता, निश्चित आयु के पश्चात् रुकना
- मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की बुद्धिलब्धि मानी गई है – 70 से 80 के बीच
- शिक्षक की आवश्यकता है – शिक्षक को नौकरी की सुरक्षा चाहिए, शिक्षक को समय पर पदोन्नति चाहिए, शिक्षक को समाज में आदर सम्मान चाहिए
- “संवेग, व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।” यह कथन है – वुडवर्थ
- कुछ मनोवैज्ञानिकों ने चरित्र का पूर्ण योग माना है – व्यक्तित्व, नैतिकता व स्वभाव का
- सीखने का सबसे बड़ा क्षेत्र माना गया है – शिक्षा को
- मनोवैज्ञानिक विधि के अन्तर्गत विधियाँ आती हैं – मनोनाटकीय विधि
- शारीरिक अस्वस्थता, काम प्रवृत्ति का प्रवाह तथा मन्द गति से विकास बालापराध के किस कारण के अन्तर्गत आते हैं – व्यक्तिगत कारण
- बाल्यावस्था में बालक दृष्टिकोण अपनाना आरम्भ करता है – यथार्थवादी दृष्टिकोण
- शिक्षा का अर्थ है – ज्ञान
- शिक्षा है – जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया
- नियमित शिक्षा है – कृत्रिम

- कौन नियमित शिक्षा के अन्तर्गत आता है – **विद्यालयी पाठ्यक्रम**
- शिक्षा का सामान्य उद्देश्य कौन सा हो सकता है – **व्यक्तित्व का विकास**
- राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का कार्य है – **राष्ट्रीय एकता का विकास करना**
- राष्ट्रीय एकता का प्रमुख आधार क्या है – **शिक्षा**
- प्लेटो के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है – **व्यक्तित्व विकास**
- ब्लूम के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य कितने प्रकार के होते हैं – **तीन**
- शिक्षा ही राष्ट्रीय एकता का आधार है। यह कथन किसका है – **जवाहरलाल नेहरू**
- पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिए – **शिक्षा-व्यवस्था के अनुरूप, परीक्षा-प्रणाली के अनुरूप, समाज एवं परिवेश के अनुरूप**
- पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिए – **छात्र केन्द्रित**
- आर्थिक प्रगति के उद्देश्य के लिए पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिए – **व्यावसायिक शिक्षा**
- वैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिए – **कार्य एवं अनुभव केन्द्रित**
- किस दार्शनिक आधार पर निर्मित पाठ्यक्रम छात्र केन्द्रित होता है – **प्रकृतिवाद**
- पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया कब प्रारम्भ होती है – **यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है**
- पाठ्यक्रम विकास को प्रभावित करने वाला घटक है – **परीक्षा प्रणाली, समाज एवं परिवेश, अध्ययन समिति**
- प्राथमिक कक्षा के शिक्षक के लिए किसका ज्ञान होना सर्वाधिक आवश्यक है – **बाल मनोविज्ञान**
- बालकों के स्वभाव को समझने के लिए शिक्षकों को किसका अध्ययन करना चाहिए – **बाल मनोविज्ञान**
- बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किसके लिए सर्वाधिक आवश्यक है – **प्राथमिक शिक्षक**
- बाल मनोविज्ञान में अध्ययन किया जाता है – **बालक के जन्म के पूर्व गर्भावास्था से लेकर किशोरावस्था तक का**
- किसका प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है – **परिवार, समाज, विद्यालय**
- बालक के व्यवहार में परिवर्तन के लिए किस विधि का सहारा लिया जाता है – **उपचारात्मक विधि**
- बालक के व्यवहार के अध्ययन की किस विधि में बालक के माता-पिता, भाई-बहन एवं शिक्षकों से जानकारी प्राप्त की जाती है – **वैयक्तिक इतिहास विधि**
- बालक के सामाजिकता का परीक्षण किस विधि द्वारा किया जाता है – **समाजमिति विधि**
- बाल-अपराध का कारण कौन सा हो सकता है – **पारिवारिक, सामाजिक, शारीरिक**
- बालक की रुचि विद्यालय में बढ़ाने के लिए क्या किया जाना चाहिए – **विद्यालय का वातावरण बालक के अनुकूल किया जाना चाहिए**
- बाल-अपराध की रोकथाम के लिए माता-पिता को क्या करना चाहिए – **बच्चों से सहानुभूतिपूर्ण एवं सकारात्मक व्यवहार करना चाहिए**
- बाल-अपराधियों को सुधारने के लिए किसकी सहायता लेनी चाहिए – **मनोचिकित्सकों**
- शिक्षा मनोवैज्ञानिक के अध्ययन की अन्तर्दर्शन विधि में एक बार में अध्ययन हो सकता है – **केवल एक व्यक्ति का**

- 'बुद्धि के इकाई सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं – **स्टर्न एवं जॉनसन**
- शिक्षा मनोविज्ञान के प्रयोग से क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं – **अनुशासन स्थापना में, मूल्यांकन प्रक्रिया में, शिक्षण विधियों में**
- क्या आप इस कथन से सहमत हैं "शिक्षा की किसी भी योजना में शिक्षक का केन्द्रीय स्थान होता है" – **पूर्णतया सहमत**
- व्यक्तित्व आँकलन के लिए आवश्यक है – **व्यक्ति के आन्तरिक व्यवहार की जानकारी, व्यक्ति के बाह्य व्यवहार का अध्ययन**
- मनोविज्ञान को आरम्भ में कहा जाता था – **आत्मा का विज्ञान**
- उपचारात्मक विधि उपयोगी है – **पिछड़े बालकों के सुधार में**
- मनोवैज्ञानिक अध्ययन की किस विधि में व्यक्ति द्वारा स्वयं के अपने अन्तःकरण का विश्लेषण किया जाता है – **अन्तर्दर्शन विधि**
- "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्ति है।" कथन है – **गॉंधी जी का**
- शिक्षा मनोविज्ञान उपयोगी है – **पाठ्यक्रम के सुधार में, शिक्षण-विधियों के प्रयोग में, शिक्षण विधियों की खोज में**
- किस विद्वान ने मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति को ही शिक्षा माना है – **विवेकानन्द**
- जे.वी.वॉटसन ने मनोविज्ञान के किस सम्प्रदाय को प्रतिपादित किया – **व्यवहारवादी**
- मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापित हुई थी – **1879 जर्मनी**
- शिक्षा मनोविज्ञान उपयोगी है – **समय सारिणी बनाने में, परीक्षा प्रश्न-पत्र बनाने में, शिक्षण विधि के सुधार में**
- शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व है – **विद्यार्थियों की कमजोरियों का ज्ञान करने में, विद्यार्थियों को समझाने में, विद्यार्थियों को उत्प्रेरित करने में**
- प्रबलन सिद्धान्त के प्रतिपादक थे – **स्किनर**
- बच्चों में अन्तर्दर्शन की प्रवृत्ति होती है – **बहुत कम**
- अन्तर्दर्शन की अधिकता पायी जाती है – **वृद्धों में**
- शिक्षा मनोविज्ञान एक शाखा है – **मानव शास्त्र की**
- मनोविज्ञान को 'चेतना का विज्ञान' मानने वाले हैं – **वुडवर्थ**
- कैली ने शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य बतलाए हैं – **9**
- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति है – **विज्ञान**
- वर्तमान में मनोविज्ञान माना जाता है – **व्यवहार का विज्ञान**
- शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है – **नेतृत्व देना**
- अनुशासनहीन छात्रों के साथ शिक्षक का व्यवहार होना चाहिए – **विनम्र किन्तु दृढ़**
- शिक्षा के लिए उपयुक्त है – **सेमिस्टर पद्धति**
- किस ग्रन्थ में मानव विकास की दस अवस्थाओं का वर्णन हुआ है – **महाभारत**
- शिक्षा मनोविज्ञान की वस्तुनिष्ठ विधि है – **साक्षात्कार विधि**
- जीवन इतिहास विधि का प्रयोग सर्वप्रथम किया था – **टाइडमैन ने**
- 'शिक्षा' और 'मनोविज्ञान' को जोड़ने वाली कड़ी है – **मानव व्यवहार**

- समाजमिति विधि के प्रतिपादक हैं – **जे.ए.मुनरो**
- “अन्तर्दर्शन के बिना बहिर्दर्शन असम्भव है।” यह कथन है – **सत्य**
- “मनोविज्ञान, व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।” कथन है – **स्कनर**
- “शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है।” कथन है – **स्कनर**
- स्कनर के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का आरम्भ हुआ – **अरस्तु से**
- कार्ल सी. गैरीसन ने किस विधि का अध्ययन किया था – **लम्बात्मक विधि**
- शिक्षक की सफलता का रहस्य है – **मनोविज्ञान का ज्ञान**
- शिक्षा मनोविज्ञान की आत्मनिष्ठ विधि है – **गाथा वर्णन विधि**
- पूर्व अनुभव या व्यवहार का लेखा तैयार करने की विधि है – **गाथा वर्णन विधि**
- शिक्षा मनोविज्ञान उपयोगी है – **व्यक्ति तथा समाज के लिए**
- किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार सभी बालक जन्म से समान होते हैं – **वाटसन**
- मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान नहीं मानते हैं – **वाटसन**
- अपराधी प्रवृत्ति वाले बालक के लिए उपयुक्त विधि है – **उपचारात्मक विधि**
- आत्म निरीक्षण विधि का प्रतिपादन किया था – **लॉक ने**
- ‘खेल’ सिखाते हैं – **अनुशासन, सामाजिकता, रचनात्मकता**
- खेल होते हैं – **आत्मप्रेरित, आनन्ददायक, उद्देश्यहीन**
- बालक के लिए खेल का महत्त्व है – **शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास**
- “किण्डरगार्टन पद्धति” के प्रतिपादक हैं – **फ्रोबेल**
- वह ‘खेल प्रणाली’ जिसमें किसी तरह के प्रतिबन्ध नहीं लगाए जाते हैं – **डाल्टन पद्धति**
- ‘खेल-खेल’ में ज्ञान प्रदान करने की पद्धति है – **मॉण्टेसरी**
- ‘संवेग’ का शाब्दिक अर्थ है – **उत्तेजित दशा**
- ‘खेल प्रणाली’ का जन्मदाता है – **फ्रोबेल**
- “माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में हस्तान्तरण होना वंशानुक्रम है।” कथन है – **बी०एन०झा**
- ‘खेल’ का सामान्य अर्थ है – **चित्त की उमंग**
- स्थायीभाव होते हैं – **जन्मजात**
- “वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।” कथन है – **रॉस का**
- ‘डाल्टन पद्धति’ का प्रतिपादक है – **मिस हेलेन पार्कहर्स्ट**
- “संवेग, व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।” कथन है – **बुडवर्थ**
- किस पद्धति में खेल गीतों द्वारा शिक्षा दी जाती है – **किण्डरगार्टन**
- विकास की प्रक्रिया चलती है – **जीवन पर्यन्त**
- किशोरियों में होने वाले शारीरिक परिवर्तन हैं – **मासिक स्राव का प्रारम्भ, उरोजों का उभार, बगलों में पसीना आना**
- बाल्यावस्था होती है – **5 से 12 वर्ष तक**
- विकास दिशा सिद्धान्त के अनुसार विकास होता है – **सिर से पैर की दिशा में**
- जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है – **विकास**
- ‘प्रतिद्वन्द्वात्मक सामाजीकरण’ की अवस्था कहा जाता है – **बाल्यावस्था को**
- बालक का विकास परिणाम है – **वंशानुक्रम व वातावरण की अन्तःक्रिया का**

- यौन-शिक्षा देने वाले अध्यापक में कौन-सा गुण होना आवश्यक है
— सच्चरित्रता, यौनांगो का ज्ञान, संवेगात्मक परिपक्वता
- शारीरिक विकास का क्षेत्र है — हड्डियों में वृद्धि, स्नायुमण्डल का विकास, मांसपेशियों में वृद्धि
- किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल मानते हैं — ई०ए०किर्क पैट्रिक
- किशोरावस्था की शिक्षा में होनी चाहिए — यौन शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, निर्देशन शिक्षा
- संग्रह की प्रवृत्ति पाई जाती है — बालक में
- किशोरावस्था की विशेषता है — विषमलिंगीय समूहों का बनना
- किस सिद्धान्त के अनुसार भिन्न — भिन्न व्यक्तियों में विकास की गति भी भिन्न — भिन्न होती है
— विकास का गति सिद्धान्त
- वंश परम्परा के मुख्य वाहक हैं — जीन्स
- 'परिवर्तन की अवस्था' कहा गया है — किशोरावस्था को
- कोल ने बालक के विकास की अवस्थाएँ बताई हैं — 12
- जीवन के किस काल को तूफान तथा संघर्ष की अवस्था कहा जाता है — किशोरावस्था
- मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चरित्र है — व्यक्तित्व, नैकता, स्वभाव
- बालक के विकास की अवस्थाओं का सही क्रम है — शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था
- जीवन की किस अवस्था को सुखद वर्षा तथा प्रकाश की अवस्था कहा जाता है
— किशोरावस्था का
- संसार के प्रत्येक भाग में मानव जाति के शिशुओं में विकास का प्रतिमान है — समान
- उत्तम चरित्र का लक्षण है — आत्म नियन्त्रण, विश्वसनीयता, अन्तःकरण की शुद्धता
- किशोरावस्था में किस प्रकार का निर्देशन उपयोगी रहता है — व्यावसायिक, शैक्षिक, वैयक्तिक
- प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा में महत्व देना चाहिए — समन्वय को
- प्राथमिक स्तर की शिक्षा देने वाली होनी चाहिए — छात्र सक्रियता पर आधारित
- 'बाल्यावस्था' को जीवन का 'अनोखा काल' बताया है — कोल व ब्रूस ने
- 'दोहराने की प्रवृत्ति' होती है — शैशवावस्था में
- शैशवावस्था के लिए उत्तम शिक्षण विधि है — माण्टेसरी विधि, खेल विधि, किण्डगार्टन विधि
- बालकों को दी जाने वाली शिक्षा में होना चाहिए — नैतिक विकास की क्षमता, मूल प्रवृत्तियों का शोधन, अमूर्त स्थायी भावों का निर्माण
- किशोरावस्था की प्रमुख समस्या है — समायोजन
- बाल-विकास निर्भर करता है — वंशानुक्रम पर, वातावरण पर
- किशोरावस्था की विशेषता नहीं है — ईश्वर में पूर्ण विश्वास
- प्राथमिक स्तर की शिक्षा होनी चाहिए — मूर्त, जीवन से सम्बन्धित, रोचक
- कौन प्रौढ़ों को अपनी मार्ग की बाधा समझता है — किशोर
- सफल एवं प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक है — व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान
- बालकों में किशोरावस्था का आरम्भ माना जाता है — 12 वर्ष की आयु से
- 'करके सीखना' किस अवस्था के लिए उपयुक्त है — शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था
- छात्रों को अभिप्रेरणा प्रदान करने हेतु उत्तम उपाय है — नवाचारों का प्रयोग
- किसी विशिष्ट विषय पर छात्रों में विचार विनिमय किस विधि में होता है — विचार गोष्ठी

- 'प्रेरणा' होती है — सकारात्मक, नकारात्मक
- 'सीखने के सफल अनुभव अधिक सीखने की प्रेरणा देते हैं।' कथन है — फ्रैंडसन का
- किस मनोवैज्ञानिक ने अपने अधिगत सिद्धान्त में पुनर्बलन पर सबसे पहले बल दिया — स्किनर
- 'पुरस्कार' है — बाह्य प्रेरणा
- आवश्यकता के अभाव में प्रेरणा की प्रक्रिया प्रारम्भ नहीं हो सकती।
- सीखने की उपयुक्त प्रक्रिया है — सरल से कठिन
- कोलहर ने अपना अधिगम सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिए प्रयोग किया — सुल्तान नामक चिम्पांजी पर
- "जो बात पहले सीखी जा चुकी है, उसे स्मरण रखना ही स्मृति है।" कथन है — वुडवर्थ का
- छः वनमानुषों व केले का प्रयोग किया था — कोहलर ने
- "सीखना, विकास की प्रक्रिया है।" कथन है — वुडवर्थ का
- 'प्रबलन-सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया था — सी०एल०हल ने
- छात्रों को अभिप्रेरणा प्रदान करने के लिए अपनाएँगे — पुरस्कार एवं दण्ड
- विद्यार्थी को प्रेरित करने की विधि है — प्रतिस्पर्धा, आत्म गौरव, दण्ड
- सीखने की प्रभावी विधि है — स्वयं करके, निरीक्षण द्वारा, परीक्षण द्वारा
- चिन्हों द्वारा सीखना सिद्धान्त के प्रतिपादक है — टॉलमैन
- अभिप्रेरणा उद्दीप्त करती है — क्रियाशीलता को
- "सीखना, व्यवहार के परिणमस्वरूप व्यवहार में कोई परिवर्तन है।" कथन है — गिलफोर्ड
- 'प्रेरणा' शब्द का मनोवैज्ञानिक अर्थ है — आन्तरिक उत्तेजना
- "बुद्धि, कार्य करने की एक विधि है।" कथन है — वुडवर्थ का
- प्रतिभावान छात्र की बुद्धि लब्धि होती है — 140 से ऊपर
- शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाने के लिए प्रयोग किया जाता है — निदानात्मक परीक्षण
- बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता है — समस्याग्रस्त बालकों के सुधार में, सर्वोत्तम बालक के चुनाव में, भावी सफलता के ज्ञान में
- भूलभुलैया टेस्ट है — वैयक्तिक क्रियात्मक परीक्षण
- बिने साइमन की बुद्धि परीक्षण विधि कितने वर्ष के बालकों के लिए थी — 3 से 15 वर्ष
- बालक की कमजोरी के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए प्रयोग किया जाता है — निदानात्मक परीक्षण
- बुद्धि के दो खण्ड सिद्धान्त का प्रतिपादक है — स्पीयरमैन
- मानसिक आयु का प्रत्यय दिया था — बिने
- व्यक्तित्व अध्ययन की विषयगत विधि है — हस्तरेखा अध्ययन
- शिक्षक निर्मित परीक्षण होते हैं — आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ
- समन्वित व्यक्तित्व में पाया जाता है — दृढ़ इच्छाशक्ति
- कैली ने बुद्धि को कितने खण्डों में विभाजित किया है — 9 खण्डों में
- बुद्धि का द्वि-तत्त्व सिद्धान्त किसने दिया — स्पीयरमैन

- वैयक्तिक विभिन्नता के क्षेत्र हैं – **लिंग-भेद, शारीरिक संरचना, मानसिक-योग्यताएँ**
- बालक के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति करने वाला कारक है – **अल्प गृह कार्य**
- शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य में बाधा पहुँचाने वाला कारक है – **न्यूनतम वेतन, अत्यधिक कार्यभार, निरंकुश प्रशासक**
- टर्मन के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि-लब्धि होती है – **140 से अधिक**
- पिछड़े बालकों की बुद्धि-लब्धि होती है – **120**
- 'संघर्ष' का सामान्य अर्थ है – **विपरीत विचार, विपरीत इच्छाएँ, विपरीत उद्देश्य**
- मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति रहता है – **वास्तविकताओं में**
- बीयरस कुण्डा की दशा में बालक बन जाता है – **आक्रमणकारी, एकान्तवासी, रोगी**
- संघर्ष से बचने के उपाय हैं – **परिवार का उत्तम वातावरण, सलाह व प्रशिक्षण, आत्मविश्वास का विकास**
- प्रतिभाशाली बालकों की पहचान की जा सकती है – **बुद्धि परीक्षण द्वारा, अभिरुचि परीक्षण द्वारा, उपलब्धि परीक्षण द्वारा**
- बालकों के पिछड़ेपन का कारण है – **सामाजिक व सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक**
- प्रतिभाशाली बालक की इन्द्रियाँ होती हैं – **तीव्र**
- समायोजन या सामंजस्य का लक्षण नहीं है – **असन्तुलन**
- अन्धे बालक पढ़ सकते हैं – **ब्रेल लिपि**
- तनाव कम करने की अप्रत्यक्ष विधि है – **दिवास्वप्न**
- बहरे बच्चे को पढ़ाने की एक विधि है – **आत्मीकरण**
- तनाव कम करने की प्रत्यक्ष विधि है – **समस्या समाधान, विकल्पों की खोज, व्याख्या व निर्णय**
- व्यक्ति अपना सन्तुलन स्थापित कर सकता है – **विश्लेषण व निर्णय द्वारा**
- शैशव अवस्था में बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव नहीं पड़ता है – **राजनैतिक गतिधियों का**
- प्रतिभाशाली बालकों में किस अवस्था के लक्षण शीघ्र दृष्टिगोचर होते हैं – **किशोरावस्था**
- 'शिक्षा को मनुष्य और सम्पूर्ण समाज का निर्माण करना चाहिए।' कथन है – **डॉ. राधाकृष्णन्**
- 'सीखना विकास की प्रक्रिया है।' कथन है – **बुडवर्थ**
- सह-सम्बन्ध की क्रमान्तर विधि के प्रतिपादक हैं – **स्पीयरमैन**
- सामंजस्य में विश्वास करने वाला सिद्धान्त है – **अस्तित्ववाद**
- सांख्यिकी में अध्ययन किया जाता है – **परिमाणात्मक विशेषताओं का**
- सृजनात्मक व्यक्ति में होती है – **तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता**
- वर्ग सीमाएँ कितने प्रकार की होती हैं – **दो**
- सतत् श्रेणी में आंकड़ों का व्यवस्थापन करने के लिए कौन सा वर्गीकरण उपयोग में लाया जाता है – **संख्यात्मक**
- अधिगम के पुनर्बलन सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं – **हल**
- सांख्यिकी है – **कला, विज्ञान**
- जब अंक वितरण पूर्ण हों तो प्रयोग करना चाहिए – **मध्यमान**
- 'वास्तविक शिक्षा का संचालन वास्तविक दर्शन ही कर सकता है।' कथन है – **स्पेन्सर**

- केन्द्रीय प्रवृत्ति का सबसे विश्वसनीय एवं वैध मापक है – **मध्यमान**
- विचलनशीलता का सर्वश्रेष्ठ मापक है – **प्रमाप विचलन**
- 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है – **पूर्व बाल्यावस्था को**
- पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता है – **दल/समूह में रहने की अवस्था, अनुकरण करने की अवस्था, खेलने की अवस्था**
- उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्त्व में परिवर्तन समझने लगते हैं – **द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र**
- विकास का अर्थ है – **अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला**
- 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते हैं – **विद्यालय में**
- समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना है, ताकि सन्तुष्ट किया जा सके – **आवश्यकताओं को**
- बालक प्रतिभाशाली होते हैं – **जन्मजात**
- निःशक्त बालकों की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता है – **समावेशित शिक्षा द्वारा**
- मानसिक मन्दता की विशेषता है – **बुद्धिलब्धि का 25 से 70 के मध्य होना, धीमी गति से सीखना एवं दैनिक जीवन की क्रियाओं को न कर पाना, वातावरण के साथ अनुकूलन में कठिनाई**
- विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए कौन सा तरीका अधिक महत्वपूर्ण है – **अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण**
- 'कमजोर वर्ग के बालक' से तात्पर्य है – **ऐसे अभिभावकों के बालकों से जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय की सीमा से नीचे के वर्ग में आते हैं**
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में निर्दिष्ट किया गया है कि कक्षा 1 से कक्षा 5 तक यदि प्रवेश दिए गए विद्यार्थियों की संख्या दो सौ से अधिक है, तो विद्यार्थी अध्यापक आवश्यक अनुपात होगा – **चालीस**
- प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए किसे बेहतर मानते हैं – **स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव**
- विकलांग बालकों के अन्तर्गत आते हैं – **नेत्रहीन बालक, गूंगे तथा बहरे बालक, शारीरिक विकलांग बालक**
- 'एक बालक प्रतिदिन कक्षा से भाग जाता है।' वह बालक है – **पिछड़ा बालक**
- शिक्षा मनोविज्ञान के निर्धारित उद्देश्य क्या हैं – **शिक्षार्थियों के व्यवहारों में समुचित परिवर्तन लाने के लिए माहौल तैयार करना, बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना, शिक्षकों में शैक्षिक समस्याओं के प्रति उचित मनोवृत्ति पैदा करना**
- छात्र क्रिया द्वारा सरलता से सीखते हैं, क्योंकि – **छात्र स्वयं कार्य करके सीखते हैं**
- वह खेल जिसमें बालक स्वयं कुछ बनाता है – **रचनात्मक**
- प्रतिभावान बालकों की पहचान किस प्रकार की जा सकती है – **बुद्धि परीक्षा द्वारा, अभिरुचि परीक्षण द्वारा, उपलब्धि परीक्षण द्वारा**
- वंचित वर्ग के बालकों के अन्तर्गत बालक आते हैं – **अन्धे व अपंग बालक, मन्दबुद्धि व हकलाने वाले बालक, पूर्ण बधिर या आंशिक बधिर**

- बालक में सजगता व जागरूकता पैदा करने के लिए सर्वोत्तम साधन है – **पुस्तकें**
- बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किया जाता है – **बालक के जन्म से पूर्व गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक**
- यदि छात्र पाठ्यवस्तु में रुचि नहीं ले रहे हों तो आप क्या करना पसन्द करेंगे
– **अरुचि का कारण जानने का प्रयास करेंगे**
- एक नेता के रूप में अध्यापक को सर्वाधिक ध्यान रखना चाहिए – **छात्रों के हित का**
- शिक्षक का अच्छा स्वास्थ्य उसे अपने व्यवसाय में किस प्रकार सहायता करता है
– **अपना कार्य तत्परता से कर सकता है**
- मनोवैज्ञानिक कोल व ब्रूस ने 'अनोखा काल' किसे कहा है – **बाल्यावस्था को**
- 'कोर पाठ्यक्रम' किस बिन्दु पर जोर देता है – **प्रजातांत्रिक विधियों पर, समस्या समाधान पर, सहकारी योजना पर**
- कक्षा में छात्रों के ध्यान को किस प्रकार एकाग्र कर सकते हैं – **विशेष प्रकार के वस्त्र पहनकर**
- नेता के रूप में छात्रों पर प्रभाव जमाने के लिए आवश्यक है कि अध्यापक
– **उसकी रुचियों में विविधता हो**
- जब कोई छात्र उतनी सफलता हासिल नहीं कर पाता, जितनी कि उसमें क्षमता है, तो इसका प्रमुख कारण क्या हो सकता है – **बालक सफलता एवं क्षमता में सामंजस्य नहीं स्थापित कर पाता**
- 'पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते हैं' यह कथन – **लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है**
- सीखने के अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया – **कोहलर ने**
- अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त के अनुसार – **सीखना धीरे – धीरे नहीं बल्कि एकाएक होता है**
- गृहकार्य अलग – अलग बच्चों के लिए – **योग्यता स्तर के अनुसार होना चाहिए**
- निरन्तर आन्तरिक परीक्षण में कौन सा लाभ सबसे अधिक महत्वपूर्ण है
– **इसके कारण छात्र पूरा वर्ष परिश्रम करते हैं**
- प्रतिभाशाली बालकों की पहचान की जा सकती है – **बुद्धि परीक्षण द्वारा, उपलब्धि परीक्षण द्वारा, अभिरुचि परीक्षण द्वारा**
- भारतीय शिक्षा आयोग ने भारतीय संदर्भ में शिक्षा के किस उद्देश्य की चर्चा नहीं की है
– **प्राचीन धार्मिक परम्पराओं का पालन करना**
- मैसरो के अनुसार, मूल आवश्यकताएँ कितने प्रकार की होती हैं – **5**
- समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं – **समूह के स्वरूप का**
- जन्मजात प्रेरक को क्या कहा जाता है – **प्राथमिक प्रेरक, जैविकीय प्रेरक, शारीरिक प्रेरक**
- अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम किसने दिया – **लैमार्क ने**
- विकास शुरू होता है – **प्रसवपूर्व अवस्था से**
- "विशिष्ट बालक वह है जो मानसिक, शारीरिक व सामाजिक विशेषताओं से युक्त होते हैं," उक्त कथन है – **क्रो एण्ड क्रो का**
- मन्द गति से सीखने वाले बालकों की शिक्षा के लिए क्या कदम उठाना चाहिए
– **विशेष कक्षा**
- छात्रों को नवीन पाठ्य पुस्तक सीखने हेतु सबसे पहले – **छात्रों के स्तर पर ज्ञान करेंगे**

- सृजनात्मक बालक की प्रकृति होती है – **सृजनात्मक बालक सदैव सफलता की ओर उन्मुख रहते हैं**
- मनोवैज्ञानिक विधि के अन्तर्गत कौन सी विधि काम में ली जाती है – **मनोनाटकीय, समाज नाटकीय, अनैदेशिक**
- श्यामपट्ट, शिक्षण में मुख्य सहायक सामग्री है, क्योंकि – **यह विद्यार्थियों को आकर्षित कर लेता है**
- स्वप्न के प्रत्यक्ष तथा गुप्त वस्तु में क्या अन्तर होता है – **जो स्वप्न में देखा जाता है, वह प्रत्यक्ष रूप है तथा जो अप्रत्यक्ष है, वह गुप्त रूप है**
- शिक्षण में भिन्न – भिन्न विधियों का प्रयोग क्यों किया जाता है – **शिक्षण को सरल बनाने के लिए, छात्र के अनुकूलन शिक्षण हेतु, छात्रों में रुचि पैदा करने के लिए**
- 'पर्यावरण – शिक्षा' को शालाओं में पाठ्यक्रम का अंग बनाना उचित है, क्योंकि – **पर्यावरण जीवन का महत्वपूर्ण अंग है**
- अधिगम का पुनर्बलन सिद्धान्त किसने दिया – **हल ने**
- मूल्यांकन महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे पता चलता है – **कक्षागत – अधिगम अनुभव की प्रभाविता का, शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति का, शिक्षण विधियों की प्रभाविता का**
- सृजनशील बालक की विशेषता है – **साहस की उपलब्धि, अत्यधिक जिज्ञासु, परिश्रमी, मौलिकता**
- जटिल बालकों के दो प्रकार किस विद्वान द्वारा बताए गए हैं – **बर्ट द्वारा**
- 'सीखने का सूझ के सिद्धान्त' में किस जानवर पर प्रयोग किया गया – **चिम्पैंजी पर**
- शिक्षण और अधिगम हैं – **एक सिक्के के दो पहलू हैं, शिक्षण से अधिगम तथा अधिगम से शिक्षण की प्राप्ति होती है, दोनों गत्यात्मक प्रक्रियाएँ हैं**
- मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की पहचान किस से कर सकते हैं – **बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण, मन्दबुद्धि बालकों की विशेषताओं को कसौटी मानकर**
- विकासात्मक पद्धति को कहते हैं – **उपचारात्मक विधि**
- श्रवण – ह्रास से ग्रसित बच्चे कक्षा में किस सबसे मुख्य नैराश्य (कुण्ठा) का सामना करते हैं – **दूसरों के साथ संप्रेषण करने तथा सूचनाओं को बाँटने में अक्षमता**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षण में दृश्य + श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है, क्योंकि – **इनमें अधिकतम इंद्रियों का उपयोग सीखने को संवर्द्धित करता है**
- "मस्तिष्क द्वारा अपनी स्वयं की क्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है।" – **आत्म निरीक्षण विधि**
- प्रयोगात्मक विधि में सामना नहीं करना पड़ता है – **समस्या का चुनाव**
- मानव विकास जिन दो कारकों पर निर्भर करता है, वह है – **जैविक और सामाजिक**
- किस मत के अनुयायियों का कथन है कि विकास की क्रिया का आरम्भ सिर से होता है – **मस्तबोध मुखी सिद्धान्त**
- बालक के निजी व्यवहार का अंकन करने में कौन सी विधि सहायक होती है – **नियन्त्रण निरीक्षण विधि**
- बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए – **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा**
- वृद्धि और विकास है – **एक दूसरे के पूरक**
- नैतिक व्यवहार में सुधार का उपाय है – **अच्छी आदतों का विकास, अच्छे आदर्शों के अनुरूप, आदर्श प्रस्तुतीकरण**

- जिस आयु में बालक की मानसिक योग्यता का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है — **14 वर्ष**
- शिशु का विकास प्रारम्भ होता है — **जन्म के पश्चात्**
- जब माता — पिता के बच्चे उनके विपरीत विशेषताओं वाले विकसित होते हैं, तो यहाँ पर सिद्धान्त लागू होता है — **प्रत्यागमन का**
- जो अध्यापक काम सम्बन्धी शिक्षा दें उसमें कौन सा गुण होना चाहिए — **संवेगात्मक परिपक्वता, विनोदी स्वभाव का, काम विषय की अच्छी जानकारी**
- मनोविज्ञान के उपयोग की कठिनाई है — **मनोवैज्ञानिक परीक्षण मूल्य की दृष्टि में इतने महंगे होते हैं कि सभी पाठशालाओं में उन्हें उपलब्ध नहीं कराया जा सकता**
- शिक्षा का सम्बन्ध है — **शिक्षा के उद्देश्यों से, शिक्षार्थी व शिक्षक से, कक्षा पर्यावरण व वातावरण**
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण के निर्माण में समय लगता है — **अधिक**
- शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र है — **व्यापक**
- किस विधि में उद्दीपन, अनुक्रिया के मध्य होने वाले सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है — **मनोभौतिकी विधि**
- किशोरावस्था की मुख्य समस्याएँ हैं — **शारीरिक विकास की समस्याएँ, समायोजन की समस्याएँ, काम और संवेगात्मक समस्याएँ**
- वाटसन ने नवजात शिशु में मुख्य रूप से किन संवेगों की बात कही है — **भय, क्रोध व स्नेह**
- कितने माह का शिशु प्रौढ़ व्यक्ति की मुख मुद्रा को पहचानने लगता है — **4 से 5 मास**
- मूल प्रवृत्तियाँ एक जाति के प्राणियों में एक सी होती हैं, यह कथन है — **भाटिया का**
- मानसिक विभेद के अन्तर्गत नहीं आता है — **शारीरिक संरचना सम्बन्धी भेद**
- मनोशारीरिक असमानताओं को कहा जाता है — **व्यक्तिगत विभिन्नता**
- जिन तथ्यों का निर्धारण किया जाता है और उनका सार नकालकर संख्यात्मक रूप में व्यक्त करना कहलाता है — **निर्धारण मान**
- मोटे रूप में व्यक्तिगत विभेद को कितने भागों में विभाजित किया गया है — **दो**
- मनोविज्ञान है — **विधायक विज्ञान**
- व्यक्तिगत भेद को ध्यान में नहीं रखकर शिक्षण में प्रयुक्त की जाती है — **व्याख्यान पद्धति**
- हम जो भी नया काम करते हैं उसे आत्मसात कर लेते हैं। यह सम्बन्धित है — **आत्मीकरण के नियम से**
- सीखने के प्रकार हैं — **ज्ञानात्मक अधिगम, गामक अधिगम, संवेदनात्मक अधिगम**
- प्रारम्भिक कक्षाओं में सीखने की जिन विधियों को महत्त्व दिया है, वह है — **करके सीखना**
- छात्रों द्वारा विचार — विनिमय किया जाता है — **सम्मेलन व विचार गोष्ठी से**
- एक बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है, उचित रूप में इसका अर्थ है कि — **वह जिज्ञासु है**
- व्यक्तिगत विभेद को ज्ञात करने की विधियाँ हैं — **बुद्धि परीक्षण, व्यक्ति इतिहास विधि, रुचि परीक्षण**
- व्यक्तिगत भिन्नता होती है — **बौद्धिक, शारीरिक, व्यक्तित्व सम्बन्धी**
- सीखने के बिना सम्भव नहीं है — **वृद्धि, अभिवृद्धि**
- “सीखने की असफलताओं का कारण समझने की असफलताएँ हैं।” यह कथन है — **मर्सल का**
- “सीखना सम्बन्ध स्थापित करना है। सम्बन्ध स्थापित करने का कार्य, मनुष्य का मस्तिष्क करता है।” यह कथन है — **थॉर्नडाइक**

Daily Current Affairs PDF, Best Test Series, Best GK PDF के लिए हमें Follow करें



GK Trick By Nitin Gupta
The Ultimate Key to Success.

Welcome To

GK TRICK BY NITIN GUPTA APP

यहाँ पर आपको मिलेगा

- ✓ Best PDF Notes For All Exams
- ✓ Best Test Series For All Exams
- ✓ Daily Current Affairs PDF
- ✓ सभी Course बहुत ही कम Price पर
- ✓ सभी Test Detail Discription के साथ व Analysis करने को सुविधा

